व्याख्यान - 8

स्नातक तृतीय खंड

मैथिली कथा साहित्यक विकास

कतेको कथाकार लोकनि आरम्भिक समयमे अपन मौलिक लेखन द्वारा कथा साहित्यक पूर्ण विकास कयलनि मुदा ओ सभ प्राचीन सामाजिक ओ धार्मिक परिस्थितिक बन्धन मे कुछि पड़लाह। तत्कालीन समयमे मिथिलाक सामाजिक ओ धार्मिक स्थिति विडम्बनापूर्ण छल। समाजमे अनैतिक आ अव्यवस्थित वातावरणक निर्माण भऽ चुकल छल। एहन परिस्थितिमे लेखक साहित्यकारक ई दायित्व होइत अछि जे ओ समाजक प्रतिकूल परिस्थितिकेँ जनसामान्य धरि साधथि। मैथिली कथा साहित्यक प्रारम्भिक मौलिक लेखन कालमे एकटा एहने प्रखर ओ सशक्त साहित्यकार उपस्थित भेलाह, ओ छलाह 'कन्यादान' ओ 'द्विरागमन' सन उपन्यासक क्रान्तिकारी रचयिता - प्रो० हरिमोहन झा।

अपन प्रथम कथा संग्रह प्रणम्य देवताक संग जखन ओ कथा लेखन क्षेत्रमे पदार्पण कएल तऽ एकटा नव विधा व्यंग्यक उत्पत्ति भेल। ओ समाजकेँ हास्य आ व्यंग्यक माध्यम सँ ओकरा भीतर व्याप्त अनैतिकता आ अंधविश्वास केँ देखएबाक प्रयास कयलनि। पश्चात रंगशाला, खट्टर ककाक तरंग,

चर्चित छा एकादशी, कथा संग्रहक प्रकाशन हिनका कथा साहित्यक सर्वोत्कृष्ट कथाकारक रूपमे प्रतिस्थापित कयलक। हिनक कथा मैथिली कथा कें विकासक नव आयाम प्रदान कयलक। देवशंकर नवीनक विचारमे – "हरिमोहन झाक कथा लेखनक आरम्भ मैथिली साहित्यक ओहि संक्रमण कालमे भेल जखन मैथिली साहित्यकें पाठकक अभाव छलैक। एक दिस पाँचम दशक धरि प्रकाशित पत्र-पत्रिका लेखक वर्ग तैयार केलक तँ दोसर दिश हरिमोहन झा एकटा पैघ पाठक वर्ग तैयार केलनि"।

हरिमोहन झा जाहि समयमे कथा लेखनक क्षेत्रमे अयलाह, ओहि समयमे समाज ब्राह्मणवादी परम्परा स आक्रान्त छल; तैं ई ब्राह्मणो समाजके सम्मुख शान्ति कथाक सृष्टि कयलनि। समग्रताक संग अहाँ जखन हरिमोहन बाबूक मैथिली कथाक मूल्यांकन करब तँ स्पष्ट होएत जे मैथिली कथाक विकास यात्रामे हिनक कथा महत्वपूर्ण सिद्ध भेल। हिनक कथा पाठक बनौलक समाजकें जगौलक आ परवर्ती कथाकार लोकनि कें नव विषय-वस्तुक संग समाजक सम्मुख अयबाक प्रेरणा देलक।

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार